सम्पादकीय

गरिमा, सम्मान और प्रतिष्ठा की गौरवपूर्ण पराकाष्ठा

प्रिय पाठको,

भारत की राजधानी नई दिल्ली के मशहूर विज्ञान भवन के प्लेनरी सभागार का शानदार मंच और देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर विराजमान महामहिम राष्ट्रपति महोदया की गरिमापूर्ण उपस्थिति। राजभाषा हिन्दी दिवस के समारोह का गौरवपूर्ण अवसर और 14 सितम्बर, 2011 की दोपहर का वक़्त। ऐसे में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2010-11 के दौरान प्रकाशित गृह पत्रिकाओं की अखिल भारतीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता के रूप में जब पश्चिम रेलवे की लोकप्रिय गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का नाम सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका के तौर पर पुकारा गया तो एकबारगी लगा कि जैसे समय की रफ़्तार थम गई है और हमारे अरमानों के परिंदों ने आसमान की बुलंदियों को छूकर अपनी गौरव पताका फहरा दी है। गरिमा, सम्मान और प्रतिष्ठा की गौरवपूर्ण पराकाष्ठा की इससे बड़ी मिसाल भला और क्या हो सकती है ? 'रेल दर्पण' की सम्पादकीय टीम की ओर से जब हमारे महाप्रबंधक महोदय ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार महामहिम राष्ट्रपति महोदया के करकमलों से ग्रहण किया, तो हम सभी का अंतर्मन अकथनीय उल्लास और उत्कर्ष की खुशनुमा फुहारों में इस कदर भीग गया कि वह शानदार क्षण हम सभी की ज़िंदगी का एक यादगार लम्हा बन गया।

'रेल दर्पण' को मिला सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार

इस सर्वोच्च सम्मान को हमने पश्चिम रेलवे और इसकी पूर्वज बॉम्बे, बरोडा एंड सेंट्रल इंडिया रेलवे के उन तमाम सम्पादकों एवं लेखकों की ओर से ग्रहण किया, जिन्होंने 'बी बी एंड सी आई' मैगज़ीन से लेकर 'वेस्ट रेल' मैगज़ीन और 'रेल दर्पण' तक के रचनात्मक सफ़र में अपना सक्रिय योगदान दिया है। हमें विशेष खुशी है कि इस गौरवपूर्ण अवसर का साक्षी बनने के लिए पश्चिम रेल परिवार के मुखिया यानी हमारे महाप्रबंधक महोदय श्री आर. सी. अग्रवाल स्वयं उपस्थित थे और उन्होंने ही हमारी ओर से यह शानदार पुरस्कार हासिल किया। यह एक सुखद संयोग है कि हमारे रचनात्मक प्रयासों को यह सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान ऐसे वर्ष में मिला है, जब हम पश्चिम रेलवे की स्थापना की हीरक जयंती और वडोदरा के पास स्थित देश की पहली नैरोगेज प्रणाली की 150 वीं जयंती मना रहे हैं। इस असाधारण उपलब्धि पर हम समूचे पश्चिम रेल परिवार के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, उनके परिजनों, सभी रचनाकारों और 'रेल दर्पण' के तमाम पाठकों एवं शुभचिंतकों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

दरअसल, पश्चिम रेलवे पर प्रकाशित की जाने वाली मैगज़ीन या पत्रिकाओं का इतिहास काफी पुराना है। उपलब्ध रिकॉर्ड के मुताबिक 1923 से अक्टूबर, 1951 तक प्रकाशित बी बी एंड सी आई मैगज़ीन के विभिन्न अंकों तथा देश को मिली आजादी के पश्चात 5 नवम्बर, 1951 को पश्चिम रेलवे की विधिवत स्थापना के बाद से 1967 तक प्रकाशित 'वेस्ट रेल' मैगज़ीन के विभिन्न संस्करणों की वास्तविक प्रतियाँ मुख्य जनसम्पर्क कार्यालय में आज भी उपलब्ध हैं। वर्ष 2000 में प्रकाशित 'रेल दर्पण' के प्रवेशांक से लेकर वर्ष 2011 में छपे 'हीरक जयंती विशेषांक' तक सभी अंकों की प्रतियाँ भी सहेज कर रखी गई हैं। 'बी बी एंड सी आई' और 'वेस्ट रेल' मैगज़ीनों में मुख्य तौर पर बम्बई, वडोदरा, दाहोद, अहमदाबाद, अजमेर, रतलाम, वलसाड, मधू और कोटा जैसे तत्कालीन इलाकों की प्रमुख गतिविधियों के समाचारों और उपयोगी सूचनाओं के अलावा साहित्य एवं हास्य-व्यंग्य से जुड़ी सामग्री भी प्रकाशित हुआ करती थी तथा सभी पृष्ठ श्वेत-श्याम छपा करते थे, मगर कालांतर में जब ज़माना बदला और नई सहस्राब्दी की शुरुआत के अवसर पर वर्ष 2000 में 'रेल दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ, तो इसमें कई रंगीन पृष्ठ भी शामिल थे। उच्चस्तरीय मुद्रण गुणवत्ता, पठनीय सामग्री एवं आकर्षक साज-सज्जा से सुसज्जित 'रेल दर्पण' अंक-दर-अंक निरंतर निखरती गई।

वास्तव में यह अनमोल कामयाबी रचनात्मकता एवं सृजनधर्मिता के प्रति समर्पित 'रेल दर्पण' की समूची सम्पादकीय टीम के अगाध परिश्रम और प्रतिबद्धता के फलस्वरूप हासिल हो पायी है, जिसने हमारे वैचारिक संस्कारों को नये आयाम देते हुए सफलता के नित नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। यह सम्पादकीय टीम जनसम्पर्क विभाग के होनहार अधिकारियों, निरीक्षकों एवं अन्य सभी सम्बंधित कर्मचारियों की एक ऐसी समर्पित टीम है, जिसने 'रेल दर्पण' को कामयाबी और लोकप्रियता के इस शिखर पर पहुँचाया है। इस समर्पित टीम के रचनात्मक प्रणेता के रूप में 'रेल दर्पण' के वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक और जनसम्पर्क अधिकारी (क्षेत्रीय प्रचार) श्री गजानन महतपुरकर का सक्रिय योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहा है, जिनकी सार्थक पहल पर 'रेल दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ और जिन्होंने अपनी दस वर्षीय पत्रकारीय पृष्ठभूमि तथा एक कुशल कवि एवं लेखक के रूप में अपने सृजनात्मक अनुभव का सदुपयोग करते हुए साल-दर-साल 'रेल दर्पण' को नित नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक के रूप में हमारी लोकप्रिय पत्रिका को मिले सर्वोच्च सम्मान को पाकर मैं काफी अभिभूत एवं पुलकित हूँ और इस गरिमापूर्ण अवसर पर 'रेल दर्पण' के सभी पूर्ववर्ती प्रधान सम्पादकों, संरक्षकों एवं परामर्शदाताओं का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने 'रेल दर्पण' की विकास यात्रा में अपने अमूल्य मार्गदर्शन के ज़रिये अहम योगदान दिया।

सर्वोच्च सफलता के इन रोमांचक क्षणों का उत्सव मनाते हुए 'रेल दर्पण' का नवीनतम अंक आपको सौंपने में हमें काफी प्रसन्नता हो रही है। इस अंक को हमने किसी विशेषांक के दायरे में न बांधते हुए साहित्यिक एवं ज्ञानवर्द्धक रचनाओं के उन्मुक्त विचरण को वरीयता दी है, जिसकी खुशबू हमारे तमाम पाठक बखूबी महसूस करेंगे। हाँ, देश की पहली नैरोगेज प्रणाली की 150वीं जयंती के अवसर पर हमने इस प्रणाली के दुर्लभ छायाचित्रों, दस्तावेज़ों और रोचक जानकारी पर आधारित विशेष फोटो फीचर एवं विशेष लेख प्रकाशित किये हैं, वहीं अन्य सभी नियमित स्तम्भों का समावेश हमेशा की तरह किया गया है। 'विशेष अतिथि रचनाकार' की महफिल को इस बार मशहूर कवि श्री मधुप पांडेय जी ने सजाया है, तो अंग्रेज़ी खंड में इस बार आपकी मुलाकात लोकप्रिय गायक श्री शांतनु मुखर्जी उर्फ 'शान' से करवाई जा रही है। उम्मीद है कि हर बार की तरह इस बार भी 'रेल दर्पण' का नया अंक आपके इंतज़ार को सार्थक आयाम देगा। आइये, हम सभी मिलकर अपनी प्रिय पत्रिका 'रेल दर्पण' की शानदार कामयाबी का जश्न मनायें !

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ मैं अपनी बात इन पंक्तियों के साथ समाप्त करता हूँ :-

" बैल खींचा करते थे रेल को, कभी ऐसा भी था एक ज़माना,
मगर अब है बिजली की ट्रेन का दौर, कल क्या होगा किसने जाना ?
इतिहास की बुनियाद पर खड़ी है, वर्तमान की सुंदर इमारत,
बेहतर सेवा के बुलंद इरादे लिखेंगे, उज्ज्वल भविष्य की इबारत !

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी,

शरत

(शरत चंद्रायन)
प्रधान सम्पादक एवं
मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी